Comparing on Baisakhi

हर त्योहार दी शुरुआत वैसाखी,
कनक दी झनकार वैसाखी।
रलमिल नचिए गाइए सब,
खुशियाँ दा त्योहार वैसाखी।।

सतस्रीकाल !
सतकार योग चैयरमैन सर, प्रिंसीपल मैडम अध्यापक गण अते मेरे प्यारे साथियों ! मैं आप सब दा स्वागत करदी हाँ। अज असी सारे वैसाखी मनाण लई इकट्ठे होए हाँ। हुण 'संचित जिन्दल' आप सब नू अज दा विचार सुणाण जा रहा हाँ। धन्यवाद संचित।

पंजाब, हिमाचल, जम्मू, गढ़वाल, कुमायुँ ते नेपाल विच एह दिन नवें साल दे रूप विच मनाया जांदा है। कि तुसि जाणदे हो कि वैसाखी 13 अप्रैल नू ही मनाई जांदी है। एह त्योहार सिक्खां दा सबतो प्रमुख त्योहार है। सिक्खां दे दसवें गुरु गोबिंद सिंह जी ने इस दिन खालसा पंथ दी नींव रखी सी। इस दिन गुरुद्वारे विच बोहत रौनक होंदी है। ते पंजाब विच ता लोकी भाँगड़ा ते गिद्दे पौंदे हन। ते हुण तुहाडे लई अठवीं जमात दे बच्चे पेश करण जा रहे हन देश दी सीमा ते लड़नवाले वीरा ते पंजाब दे जटां दी उल्लास नू दरशांदे हुए भाँगड़ा। उम्मीद करदी हां कि आप सब नूँ ए रंग-बिरंगा भाँगड़ा पसंद आएगा। कि वैसाखी सिर्फ पंजाब विच ही मनाई जांदी है। नहीं केरल विच इसनु 'विशु' कहंदे हन। आंध्रप्रदेश विच 'उगाड़ी', बंगाल विच 'नबा वर्ष' ते महाराष्ट्र विच 'गुड़ी पड़वा' दे नामा तो एह मनाया जांदा है। हुण नवप्रीत मैम तुवानू वैसाखी दे बारे विच कुछ बताना चावेंगी।

अखीर विच मैं एहना ही कहणा चावांगी कि भारत विच हर त्योहार ते पर्व बड़ी खुशी ते धूमधाम नाल मनाया जांदा है। पंजाब दी धरती वैसाखी दे पवितर पर्व ते सबनो विनती करदी है —
हे मेरे पुतरों। तुसी इक होकर रहवों। त्वाडी इकजुटता अते आपसी प्रेम विच ही देश दी आन, बान ते शान है। त्वानु सब नु वैसाखी दी लख-लख वधाइयाँ।

प्रिय साथियों, कल चौदह अप्रैल है और कल ही के दिन हमारे देश के संविधान के निर्माता श्री भीमराव अंबेडकर का जन्म हुआ था। उनकी याद

कल का दिन अंबेडकर जयन्ती के रूप में मनाया जाता है। इस विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करने जा रहे हैं 'प्रखर वार्षनेय'। धन्यावाद प्रखर। उम्मीद करदी हाँ कि आप नू अज दा प्रोग्राम पसंद आएगा होगा। तुहानू सब नू वैसाखी दी लख-लख वधाइयाँ। धन्यावाद।

Article on Ambedkar Jayanthi :-

बड़े-बड़े समाज-सुधारक और राजनेता समाज के मुख से अस्पृश्यता व छुआछूत की जिस कालिख को पोंछने में असमर्थ रहे, उसी कालिख को भीमराव अंबेडकर ने संवैधानिक रूप से सदा-सदा के लिए धो डाला। डा० अंबेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 में हुआ। बड़े होने पर उन्होंने अपने चारों ओर असमानता व छुआछूत के फैले हुए वातावरण को देखा, उसने उन्हें और कठोर बना दिया। डा० भीमराव अंबेडकर का एकमात्र लक्ष्य समाज में व्याप्त बिषमता व अस्पृश्यता का अंत करना तथा अछूतों का उद्धार करना था। कुछ ही समय में वह पतितों के लोकप्रिय नेता के रूप में उभरकर सामने आए। वे समाजशास्त्र, अर्थ-शास्त्र व धर्मशास्त्र के ही नहीं, विधिशास्त्र के भी प्रकाण्ड पंडित थे। इसी कारण उन्हें संविधान-समिति का अध्यक्ष चुना गया। इसलिए उन्हें भारतीय संविधान का जनक भी पुकारा जाता है। वास्तव में, डा० अंबेडकर सच्चे राष्ट्रप्रेमी, समाज-सेवी व बीसवीं सदी के बोधिसत्त्व थे। वे भारत माँ के सच्चे सपूत और सही अर्थों में दलितों के मसीहा थे। उन्होंने जीवन भर दलितों के लिए कार्य किया।

Thought :- त्योहार साल की राति के पड़ाव हैं, जहाँ भिन्न-भिन्न मनोरंजन हैं। भिन्न-भिन्न आनन्द हैं, भिन्न भिन्न क्रीडास्थल हैं।

स्वागत है सब जगतीतल का, उसके अत्याचारों का,
अपनापन रखकर स्वागत है, उसकी दुर्बल मारों का,
हिंदु-मुस्लिम ऐक्य, स्वागत उन उपहारों का,
पर मिटने के दिवस रूप, धर आवेंगे त्योहारों का।

धन्यवाद।